पांच कल्पों में से एक है "रक्त गुंजा"

गुंजा एक प्रकार का बीज है जो लाल रंग के होते हैं और इन पर एक काले रंग का छोटा सा बिन्दू होता है। इसकी बेल होती है जो भारत में सर्वत्र जंगली वृक्षों या झाड़ियों पर लिपटी हुई पायी जाती है। गुंजा जो कि एक बीज है, घुंघंची, गोमती, रत्ती आदि नामों से भी जाने जाते हैं। गुंजा भी दो प्रकार का होता है लाल गुंजा और श्वेत गुंजा। पुराने जमाने में इन बीजों का उपयोग सोना तोलने के लिये रत्ती के रूप में किया जाता था।

अलौकिक शक्ति दर्शन-

देवी-देवताओं और भूत-प्रेतादि अलौकिक, पारभौतिक शक्तियां हैं जड़ विज्ञान इनके अस्तित्व का उपहास करता है, परन्तु धर्म, संस्कृति, अध्यात्म और मनोविज्ञान के ज्ञाता इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि संसार में कुछ गुप्त, अलौकिक, रहस्यमयी, शक्तियां अवश्य है, जो यदाकदा प्रकट होकर, अपने अस्तित्व का साक्ष्य देते हुए, मानव-समाज को, बुद्धिवादियों को दिग्भ्रमित, करती रहती हैं। अस्तु, प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में उल्लेख है कि यदि रविपुष्य योग में अथवा मंगलवार के दिन गुंजामूल को शुद्ध मधु में घिसकर, वह लेप आँखों में अंजन की भाँति लगायें, तो गुप्त शक्तियों के दर्शन होते हैं। ये शक्तियाँ सात्त्विक कम, तामसिक अधिक होती हैं, अतः दुर्बल हृदय और भीरु प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिए यह प्रयोग वर्जित है।

ज्ञानवर्द्धक प्रयोग-

बकरी के दूध में गुंजा मूल को घिसकर हथेलियों पर रगड़ें, लेप करें। कुछ समय तक यह प्रयोग करते रहने से व्यक्ति की बुद्धि तीव्र हो जाती है और वह जटिल दुरूह विषयों को भी सरलता से समझ लेता है। मेधा, चिन्तन शक्ति, धारणा और विवेक तथा स्मृति की प्रखरता के लिए यह प्रयोग उत्तम होता है।

गुप्त धन दर्शन-

अंकोल के तेल में गुंजा की जड़ को घिसकर आंखों में काजल की भांति लगाये। यह प्रयोग रवि या मंगलवार को अथवा 'रविपुष्य' जैसे किसी शुभ योग में ही करना चाहिए। यह अंजन दिव्य दृष्टिदायक होता है और इसके प्रयोग से व्यक्ति को पृथ्वी में गढ़ा हुआ, आस-पास का धन दिखायी देता है।

लाल गुंजा के तांत्रिक प्रयोग-

(1) रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तथा शुक्र तथा मंगल गोचर में अनुकूल हों अथवा कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हस्त नक्षत्र हो, किंवा कृष्ण चतुर्दशी तिथि को स्वाति नक्षत्र पड़ने पर अथवा पूर्णिमा को शतभिषा नक्षत्र हो तब इनमें से किसी भी स्थिति में अर्धरात्रि में जाकर निमंत्रणपूर्वक लाल गुंजा की जड़ उखाड़ लावें। घर में आकर उसे दूध से स्नान कराके उसका धूप दीप से पूजन करें। उस जड़ के घर में रहने से सर्प आदि का भय नहीं रहता।

(2) इस जड़ को घिसकर जो माथे पर तिलक लगाता है, सभी उसके वश में होते है। सार्वजनिक जीवन में उसकी लोकप्रियता बढ़ती है। लोग उसकी बात मानते हैं।

(3) यदि उपर्युक्त विधि से गृहित जड़ को काजल के साथ घिसकर आँखों में अंजन करें तो साधक यदि लोगों को गाली देता है और फटकारता है तब भी वे उसे छोड़कर कहीं नहीं जाते।

(4) इसकी जड़ को बेल के पत्ते तथा अकौआ के रस में घिसकर माथे पर तिलक करें, तो इसे देखकर भूत-प्रेत भाग जाते हैं।

(5) केवल बेलपत्री के रस में जड़ को घिसकर आँजने से उसे भूतकाल में बीती घटनाएँ याद हो जाती हैं।

श्वेत गुंजा के तांत्रिक प्रयोग-

जिस दिन कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी हो उस दिन निम्नलिखित मंत्र पढ़कर जंगल से श्वेत गुंजा की फली तथा वहीं से मिट्टी खोदकर लावें उसे घर में या बगीचे में उपयुक्त स्थान पर इसी मंत्र को पढ़कर बो देवें-

"ॐ श्वेतवर्णे सितपर्वतवासिनि अप्रतिहते मम कार्य
कुरु ठः ठः स्वाहा।"

फली लाने तथा बोने में इसी मंत्र को पढ़ें फिर प्रतिदिन उसमें सायंकाल निम्न मंत्र से पानी डालते रहें-

"ॐ सितवर्णे श्वेतपर्वतवासिनि सर्वकार्याणि कुरु कुरु
अप्रतिहते नमो नमः।"

उपरिलिखित मंत्र से पानी डालते रहें। गुंजा के बीजों को किसी वृक्ष के समीप बोना चाहिए जिससे उसकी लता सहारा लेकर आरोहण कर

सके। जब लता बड़ी हो जावे तब उस वृक्ष के नीचे बैठकर शुद्ध आसन बिछाकर निम्न प्रकार अंग न्यास करें-

(1) "ॐ श्वेतवर्णे हृदयाय नमः।" इस मंत्र से दाहिने हाथ की अँगुलियों द्वारा हृदय का स्पर्श करें। यह हृदय न्यास कहलाता है।

(2) "ॐ पद्ममुखे शिरसे स्वाहा" पूर्ववत् सिर का स्पर्श कर शिरोन्यास करें।

(3) "ॐ सर्वज्ञानमये शिखायैवषट्" इस मन्त्र से दाहिने हाथ की अँगुलियों द्वारा शिखा (चोटी) का स्पर्श करें।

(4) "ॐ सर्वशक्तिमिति कवचायहुम्" इस मंत्र से दाहिने हाथ से बाये कन्धे का तथा बायें हाथ से दायें कन्धे का स्पर्श छाती पर स्वास्तिक बनाते हुए एक साथ करें।

(5) फिर "ॐ भगवती हीं मम कार्य कुरु ठः ठः नमः स्वाहा इति आस्त्रायफट।" इस मंत्र से दाहिनी हथेली को सिर के चारों ओर घुमाकर सामने की ओर लाकर बायें हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की अँगुलियों से प्रहार कर 'फट्' जैसी ध्वनि करें। इसी को 'अस्त्रायफट्' कहा जाता है। यह षडंगन्यास हुआ इसके पश्चात् गुंजा की पंचोपचार पूजा करके निम्न मन्त्र की 21 माला जाप करें।

"ॐ श्वेतवर्णे पद्ममुखे सर्वज्ञानमये सर्वशक्तिमिति सितपर्वतवासिनि भगवति हीं मम कार्य कुरु कुरु ठः ठः नमः स्वाहा।"

पुष्य नक्षत्र के दिन इसकी जड़ निकाल लायें और छाया में सूखाकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण चन्दन के साथ घिसकर निम्न मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करने से सर्ववशीकरण होता है।

"ॐ नमः श्वेतगात्रे सर्वलोकवशंकरि दुष्टान् वशं कुरु कुरु।
अमुकं मे वशमानय स्वाहा।"

किसी विशेष व्यक्ति का वशीकरण करना हो तो अमुकं के स्थान पर उसका नाम लिखें।

न्यौछावर न्यूनतम- 251/-

□□□

रामरक्षा कवच

आज्ञाकारी संतान, मर्यादा पुरूषोत्तम के गुणोयुक्त संतान की कामना किसे नहीं होती! श्री अगत्स्य संहितानुसार रामरक्षा यंत्र कवच को धारण करने से सर्वसिद्धियॉ प्राप्त होती हैं सभी पाप नष्ट हो जाते हैं आपत्तियॉ-विपत्तियॉ समूल नष्ट हो जाती हैं बच्चों में एकाग्रता बढ़ती है, बच्चों से लेकर बड़ो तक में संयम बढ़ता है.....

न्यौछावर राशि 4000/- रु.

शनि पीड़ा से निवारण

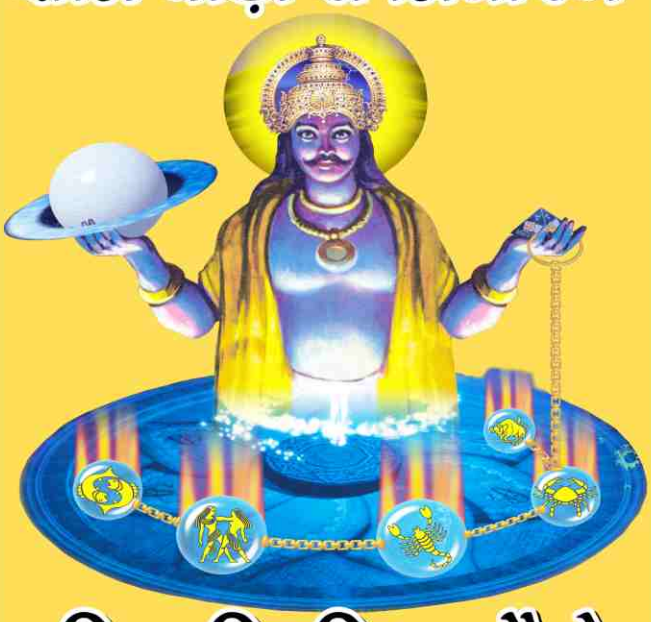

शनि शान्ति विधान पैकेट

शनि की महिमा बड़ी निराली है। शनि नाम है पीड़ा का, दुःख का। लेकिन वहीं शनि भौतिक सुखदाता भी है। शनि भाग्य बिगाड़ता है तो संवारता भी है। सूर्यपुत्र शनिदेव जिनके पराक्रम से मनुष्य तो क्या देवता भी घबराते हैं। शनि यदि प्रसन्न हो जाये तो रंक को राजा बना दे और क्रुद्ध हो जाये तो राजा को रंक। आईये! शनि जयन्ती पर हम भी शनि देव को प्रसन्न कर शनि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त करें।

याद रखिये! सौभाग्यशाली अवसर बार-बार नहीं आते।

शनि शान्ति विधान पैकेट में आप पायेंगे

1.शनि पुरुषाकार यंत्र 2. शनि माला 3.शनि तैतीसा यंत्र+महामृत्युंजय यंत्र 4.पुतला छत पर लटकाने के लिये 5. घोड़े की नाल 6.शनि का छल्ला 7.पारद शिवलिंग 8.शनि यंत्र पिरामिड 9.शनि शान्ति के मंत्र-स्तोत्र-अष्टक आदि की पॉकेट पुस्तक 10.शनि से संबंधित उपायों की सी.डी.।

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सभी सामग्री एक साथ मात्र 3100 रु में

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org